दिनांक 3 जुलाई, 1985

ैंसं. श्रो.वि./पानीपत/56-83/27570.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० कैलाश टैक्सटाईल, जी. टी. रोड, पानीपत के श्रमिक श्री मदन लाल तथा उसके प्रवत्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

'श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यमाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इस लिये अब अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शाक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यभाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अबीन गठित अम न्यायालय, अन्वाला को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

, क्या श्री मदन लाल की सेवाग्रों का समाधन व्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहृत का हकदार है? दिनांक 5 जुलाई, 1985

सं. भ्रो. वि/भिवानी/37-85/28115.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० हरियाणा स्टेट ुएप्रीकलचर, मार्किटिंग बोर्ड, सैक्टर 6, पंचकूला के श्रमिक श्री सुरेन्द्र सिंड तथा उनके प्रबन्ध कों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में । कोई ग्रीखोगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए ग्रव ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की भारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना तं. 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, भिवानी को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सुरेन्द्र निंह की सेवाश्रों का समाधान न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है। दिनांक 19 जुलाई, 1985

सं श्रो. वि./श्रम्बाला/184-83/29969.--चूंकि हरियाणा के राज्यभाल की राय है कि मै० (1) परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चन्डीगढ़ (2) जनरल मैनेजर हरियाणा रोडवेज, श्रम्बाला शहर के श्रमिक श्री बच्चन सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिन ग्रंथ हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए अर्ब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की, उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिनुवना सं. 3(44) 84-3-अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय अम्बाला को विवाद प्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला विवाद के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अभवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री बच्चन तिइ की सेवाग्रों का समाधान न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 29 मई, 1985

सं. थो. वि./23027. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं खरैती राम मलहौता कन्सीटीच्यूटड ग्रथोरटी कम जनरल मैंनेजर, हुन्डे वाला फार्म जगाधरी के श्रमिक श्री जगजाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

मीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिन गैंग हेतु किर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, मौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 3-(44)-84-3 अप, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा नामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिश्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्त्रकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री जगत न की सेत्राग्रों का समापन न्योग्रीचित तथा ठीक है ? यदिनहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?